रस सिद्धान्त Contd.

④ – (उनके रक्त, मांस और मज्जा से दिक्पालों को बलि प्रदान करूँगा।"

यहाँ पाण्डवपक्षीय वीर आलम्बन, 'पितृ-हनन' उद्दीपन अभिमुखगमनादि अनुभाव तथा अमर्ष आदि 'व्यभिचारी' भाव हैं। इनसे परिपुष्ट क्रोध-स्थायी भाव, आस्वाद्य-पदवी को प्राप्त कर रौद्ररस बन जाता है।

⑤ वीर रस – 'हनुमन्नाटक' में मेघनाद की अहंकारपूर्ण उक्ति-

"क्षुद्राः! सन्त्रासमेते विजहत हरयः! क्षुण्णशक्रेभकुम्भा
युष्मद् देहेषु लज्जां दधति परममी सायका निष्पतन्तः।
सौमित्रे! तिष्ठ, पात्रं त्वमसि न हि रुषां, नन्वहं मेघनादः
किञ्चिद् भ्रूभङ्गलीलानियमितजलधिं राममन्वेषयामि॥
(हनुमन्नाटक)

अर्थात् क्षुद्रवानरों! भय मत करो। इन्द्र के हाथी के कुम्भस्थल को विदीर्ण करनेवाले मेरे ये बाण तुम्हारे शरीरों पर पड़ते हुए लज्जा का अनुभव कर रहे हैं। सुमित्रापुत्र! रुको मेरे क्रोध के उपयुक्त पात्र तुम भी नहीं हो, मैं मेघनाद हूँ, जिसने अपने भ्रूविलास से ही सागर का नियमन कर दिया है, मैं तो उस रामचन्द्र को खोज रहा हूँ।"

यहाँ 'राम' आलम्बन, उसके द्वारा किए हुए सेतु-बन्धन आदि कार्य उद्दीपन, वानरों आदि पर प्रहार न करना 'अनुभाव' तथा इन्द्रराज-कुम्भस्थल-निवारण की स्मृति आदि 'व्यभिचारी' भाव हैं। इनसे परिपुष्ट होकर मेघनाद का उत्साह ही वीर रस का आस्वादन कराता है।

Contd.

Scanned with CamScanner

(6) भयानक-रस - श्री हर्ष (रचित) 'रत्नावली' नाटक के द्वितीय अंक में वानर वेष बनाकर विदूषक के अंतः-पुर में प्रवेश करने पर वहाँ के लोगों का भयभीत होकर भागने आदि का वर्णन है -

"नष्टं वर्षवरैर्मनुष्य गणना ऽभावादपास्य त्रपा -
- मन्तः कञ्चुकि कञ्चुकस्य विशति त्रासादयं वामनः।
पर्यन्ताश्रयिभिर्निजस्य सदृशं नाम्नः किरातैः कृतं
कुब्जा नीचतयैव यान्ति शनकैरात्मेक्षणाऽऽशङ्किनः॥
(रत्नावली)

"वर्षवर अर्थात नपुंसकों की गणना मनुष्यों में न होने के कारण वे लज्जा छोड़कर भाग गये, भय के कारण वह बौना कंचुकी के लम्बे चोगे में घुस रहा है। किनारों में रहने वाले किरातों ने अपने नाम के अनुसार ही आचरण किया।

यहाँ वानर 'विभाव', पलायनादि 'अनुभाव' तथा त्रास आदि व्यभिचारियों से अभिव्यक्त भय-रूप स्थायी भाव ही भयानक रस के रूप में सहृदय-संवेद्य बनाता है।

(7) वीभत्स-रस -

'उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथ पृथूच्छोथभूयांसि मांसान्य सस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयव सुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा।
आर्तः पर्यस्तनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्का -
दङ्कस्थादस्थिसंस्थं (संस्थं) स्थपुटगतमपि क्रव्यम -
व्यग्रमत्ति ॥
(मालती माधव)

Uma Pandey
Skt. Deptt.
B.A. III (Content)